www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग चेतना साहित्य-१३४

वायु प्रदूषण और तुलसी रोपण

युग ऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

यह पुस्तिका स्वयं पढ़ें, परिवार में सबको पढ़ाएँ ।
एक सप्ताह बाद किसी अन्य पात्र व्यक्ति को दे दें ।

सौजन्य से :

8276

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मीय अनुरोध

परमपूज्य गुरुदेव की आकांक्षानुसार उनके उत्कृष्ट चिंतन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न विषयों पर अति अल्प मूल्य वाली पुस्तकों का युग चेतना साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है । न्यूनतम १०० पुस्तिका मँगाने के लिए डाकखर्च सहित कुल २२५) रुपया भेजना चाहिए । शक्तिपीठें एक साथ अधिक साहित्य मँगाकर स्थानीय कार्यकर्ताओं को उपलब्ध करा सकती हैं । उदार दानी भामाशाहों को अपने धन का सदुपयोग ज्ञानयज्ञ में करके पुस्तिकाएँ समाज में वितरित करनी चाहिए । इसी प्रकार के क्रांतिकारी चिंतन की पाठ्यसामग्री के स्वाध्याय हेतु 'युग निर्माण योजना' मासिक पत्रिका (वार्षिक शुल्क ३०) रुपया) के सदस्य बनें ।

-लीलापत शर्मा
व्यवस्थापक
युग निर्माण योजना, मथुरा

मूल्य : ३० पैसे

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वायु प्रदूषण और तुलसी रोपण

वायु प्रदूषण की विभीषिका :

इन दिनों बढ़ती हुई जनसंख्या एवं यांत्रिक गतिविधियों से वायु प्रदूषण का अनुपात असाधारण रूप से बढ़ा है। कारखानों तथा द्रुतगामी वाहनों में जो कोयला, तेल जलता है, उसका विषैला धुँआ इस वायुमंडल में निरंतर बढ़ता जा रहा है। वायु, प्राणिमात्र के लिए अन्न, जल से भी अधिक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है। जैसे जल या पानी के सहारे जलचर जीवित रहते हैं, उसी तरह हम सब हवा के समुद्र से प्राण संपदा प्राप्त करते हैं। जल विषाक्त होने पर मछलियों का दम घुट जाता है। वायु में घुलता और बढ़ता प्रदूषण पशु–पक्षियों समेत मनुष्यों को भी घुटन का अभिशाप सहन करने के लिए विवश कर रहा है।

वायु प्रदूषण के साथ विषैली साँस से आरोग्य नष्ट होने, रुग्णता का दौर उभरने, महामारियाँ फैलने के अतिरिक्त एक संकट तापमान बढ़ने का भी है। संतुलित तापमान से मौसम का नियंत्रित क्रम यथावत् बना रहता है, किंतु यदि गर्मी की

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
मात्रा बढ़े तो उसकी भयानक प्रतिक्रिया मौसम गड़बड़ाने के रूप में प्रकट होती है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि के कारण दुर्भिक्ष पड़ते हैं। जमी बर्फ पिघलती है और समुद्र की सतह ऊँची उठने लगती है, फलतः अग्नि–युग, हिम–युग जैसे प्रकृति प्रकोप उभरते हैं, जिनके कारण भूमि–परिभ्रमण प्रक्रिया लड़खड़ाती है। भूकंप आते हैं और थल की जगह जल और जल की जगह थल आ धमकने जैसे व्यतिक्रम खड़े होते हैं। भूतकाल में जब भी ऐसे प्रकृति विपर्यय उभरे हैं, प्राणियों का जीवन और वनस्पतियों का अस्तित्व संकट में पड़ा है। खंड प्रलय जैसी स्थिति बनी है। इन दिनों बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण उन भूतकालीन विभीषिकाओं का नया दौर आने की आशंका है।

त्रासदायक परमाणु विकिरण :

युद्धोन्माद में प्रयुक्त होने वाली बारूद विषाक्त, सामान्य धुएँ की तुलना में हजारों गुनी अधिक भयंकर होती है, फिर पिछले दिनों अणु विस्फोटों का नया सिलसिला चला है। जापान में फेंके गए दो छोटे–छोटे एटम बमों ने उन दिनों तत्काल

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
कितनी हानि पहुँचाई तथा बाद में उस विकिरण से प्रभावित कितने व्यक्ति अपंग, असमर्थ हो गए, विकलांग बच्चे उत्पन्न हुए, इसका लेखा–जोखा ध्यानपूर्वक पढ़ने से कलेजा दहलने लगता है। जापान पर गिराए गए बमों की तुलना में हजारों गुना विकिरण उन परीक्षण विस्फोटों के कारण उत्पन्न हुआ है, जो जल, थल और आकाश में अनेक देशों द्वारा निरंतर किए जाते रहे हैं।

वैज्ञानिकों ने पर्यवेक्षण करके बताया है कि अब तक हो चुके अणु–विस्फोटों के कारण उत्पन्न हुई विकृतियाँ ही ऐसी हैं, जो सैकड़ों वर्षों तक कष्टकारक रहेंगी और पीढ़ियों तक त्रास देंगी। यदि यह सिलसिला आगे भी जारी रहा तो उसका प्रभाव एक प्रकार से महा–प्रलय जैसा सर्वनाशी होगा। वायुमंडल की विकृतियाँ धरती और जल पर उतरती हैं और उनसे भी ऐसे तत्त्व फैलते हैं, जो अन्न जल को भी वायु की तरह विषाक्त करके जीवन संकट उत्पन्न करते हैं ।

क्या हम चुप बैठे रहें ?

बिगाड़ने वाले जब इतनी निर्भीकतापूर्वक

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विनाश पर उतारू हैं तो देवत्व के पक्षधर लोगों के लिए यह उचित नहीं कि हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहें। यदि बिगाड़ने वाले हाथों को रोक सकने की सामर्थ्य न हो तो कम से कम सफाई की व्यवस्था तो करनी ही चाहिए। यह सरलतम और सफलतम उपचार है। इतना तो नगरपालिकाओं के मेहतर तक करते रहते हैं। हम उतना भी कुछ न करें और दूसरों के साथ जुड़े हुए अपने भाग्य–भविष्य को, पीढ़ियों के निर्वाह को अंधकारमय बनाने में रोकथाम न कर सकें, तो यह दुर्भाग्य की बात होगी। यों होना यह भी चाहिए कि महाविनाश पर उतारू लोगों पर जनमत का दबाव डालें और इस सृष्टि का सर्वनाश करने वाले आततायियों और आतंकवादियों को मनमानी न करने दें। जाग्रत लोकमत दोनों ही काम कर सकता है। रोकथाम तत्काल बन पड़ती न देखें तो भी परिशोधन प्रयोगों को हाथों में लेने का उत्साह तो प्रकट करें ही।

हरीतिमा संवर्द्धन को सार्वजनिक समर्थन :

इस संदर्भ में सरलतम उपाय–उपचार दो हैं–एक **अग्निहोत्र** प्रक्रिया दूसरा **हरीतिमा संवर्धन।**

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
अग्निहोत्र के संबंध में मतभेद और विवाद भी हो सकते हैं, किंतु हरीतिमा–संवर्धन में तो आस्तिक–नास्तिक का, धर्म–संप्रदाय का, विज्ञान–बुद्धिवाद का भी विरोध–अवरोध नहीं है, उसे तो सर्वसम्मत उपचार की तरह सर्वत्र सरलतापूर्वक अपनाया जा सकता है।

वृक्ष, वनस्पतियों का यह गुण सर्वविदित है कि वायु में से अनुपयुक्त तत्त्वों को सोखते और प्राण वायु को निःसृत करते रहते हैं। आरोग्य संपादन के उपायों में से एक यह भी है कि हरे–भरे क्षेत्र उद्यान में रहकर प्राणप्रद वायु सेवन की व्यवस्था बनाई जाए। प्रगतिशील देशों में शोभा और स्वास्थ्य का समन्वित लाभ लेने के लिए घरों के साथ हरितमा भी जोड़कर रखी जाती है। कई तो उस बागवानी को घरेलू विनोद–मनोरंजन की तरह परिवार के सदस्यों द्वारा ही संपन्न करते हैं। माली का उपयोग तो मात्र मार्गदर्शन और सहयोग भर के लिए लेते हैं। यह एक सृजनात्मक पद्धति है। शिशुपालन, पशुपालन की तरह हरीतिमा संवर्धन के माध्यम से भी निर्माण और संवर्धन की सत्प्रवृत्ति,

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
उगती–बढ़ती और परिष्कृत होती है। स्वभाव–अभ्यास में इस प्रकार का समावेश होना बड़ी बात है। देखने में यह छोटी बात दिखते हुए भी वस्तुतः बड़ी बात है। मनुष्यों में जो महामानव बने हैं, उनमें सृजनात्मक प्रवृत्तियाँ ही विशेष रूप से विकसित हुई हैं। हरीतिमा संवर्धन के प्रचार का यह अति महत्त्वपूर्ण दूरगामी लाभ है।

जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ ईंधन और इमारती कामों के लिए लकड़ी की आवश्यकता बढ़ रही है । पेड़ कट रहे हैं, पर नए लगाए नहीं जाते। ऐसी दशा में मौसम का संतुलन बिगड़ता है । अनावृष्टि से दुर्भिक्ष का माहौल बनता है । भूमिक्षरण और रेगिस्तान बढ़ने का संकट खड़ा होता है ।

क्या करें ?

जिनके पास अपनी जमीन है, वे उसका एक भाग वृक्ष उगाने, पुष्प खिलाने और शाक उत्पन्न करने के लिए सुरक्षित रखें । मात्र अन्न और नकदी देने वाली फसलें ही पर्याप्त नहीं होंगी । जिनके पास अपनी जमीन न हो वे सरकारी

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
या दूसरों की जमीन में मालिकों का स्वामित्व स्वीकार करते हुए उन्हीं के लिए अपने परिश्रम से पेड़ लगाएँ, सींचें । पूर्वजों की तथा अपने द्वारा किए जाने वाले पुण्य परमार्थ की स्मृति में वृक्ष लगाना या पैसा देकर दूसरों से लगवाने का कार्य बहुत ही श्रेष्ठ और सत्परिणाम उत्पन्न करने वाला है । बच्चों के जन्म, विवाह आदि शुभ अवसरों की स्मृति चिरस्थाई बनाने के लिए वृक्ष लगाएँ ।

घरों में शाक–वाटिका लगाने का आंदोलन इसी अभियान का एक अंग है । वनस्पति से भी छोटे रूप में वृक्षों जैसे लाभ मिलते हैं । जिनके पास भूमि नहीं है, वे भी आँगन–बाड़ी, छप्पर–बाड़ी, छत–बाड़ी के रूप में शाक उगा सकते हैं । साथ ही उससे मुफ्त में ताजे शाक मिलने जैसे आर्थिक लाभ उठाते रह सकते हैं ।

तुलसी आरोपण–एक महान् पुण्य कार्य :

तुलसी रोपण को हरीतिमा संवर्द्धन के प्रयासों का मुकुटमणि कहा जा सकता है । तुलसी में वायु प्रदूषण का परिशोधन करने की अद्भुत क्षमता है । उसके संपर्क से बहने वाली हवा में

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
आरोग्यवर्द्धक अनेक विशेषताएँ भरी रहती है । यहाँ तक कि मक्खी, मच्छर, खटमल, पिस्सू ही नहीं साँप, बिच्छू तक को दूर करती हैं । औषधियों में तुलसी को अनुपम एवं मूर्धन्य माना गया है । इसमें प्रायः सभी छोटे–बड़े रोगों का उपचार करने की क्षमता है, तुलसी, काली मिर्च, गंगाजल के योग से गायत्री मंत्र जपते हुए छोटी गोलियाँ बनाकर रख लेने और उन्हें अनुपान भेद से विभिन्न रोगों में घरेलू चिकित्सा की तरह काम में लाया जा सकता है ।

वृक्ष वनस्पतियों के उगाने, पौधने, बढ़ाने की कला को अधिकाधिक विकसित किया जाना चाहिए । इसके द्वारा संबद्ध लोगों में सृजनात्मक कुशलता बढ़ती है, कलाकारिता, सौंदर्य वृद्धि एवं सुरुचि निखरती है, शिशुपालन जैसा आनंद आता है । पौधों की मैत्री से हाथों–हाथ सुगंधित सुरभित प्राणवायु के रूप में जीवनी शक्ति का उपहार मिलता है । तुलसी रोपण में औषधियों के लिए प्रयुक्त होने वाली जड़ी–बूटियों को उगाने–बढ़ाने का भी एक अभिनव शुभारंभ संकेत है ।

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन दिनों बढ़ते प्रदूषण से बचने के लिए कारगर उपचार के इस संदर्भ में वनस्पति संवर्द्धन का उपचार यदि काम में लाना हो तो इसके लिए तुलसी रोपण को प्रमुखता देनी होगी । इसके पौधे हर आँगन में लगाए जाने चाहिए और इस आधार पर आस्तिकता एवं धर्मधारणा के संवर्द्धन का भी दुहरा लाभ उठाया जाना चाहिए । धातु या पत्थर से ही प्रतिमा नहीं बनती वरन् अक्षय वट, बोधि वृक्ष, देव अश्वत्थ की तरह पेड़ों और पौधों को भी भगवान् की प्रतिमा मानकर उनको श्रद्धा संवर्द्धन का निमित्त कारण बनाया जा सकता है ।

तुलसी का बिरवा आँगन में एक सुसज्जित थाँवले के रूप में लगाया जाए और उसे खुले आकाश में सूर्य भगवान् की, खुले पवन की, वरुण की, बादल की छत्रछाया में पलने वाला देवता माना जाए । वनस्पति मंदिर सच्चे अर्थों में एक पुनीत देवता है । धातु या पाषाण की प्रतिमा की तुलना में तुलसी का महत्त्व किसी प्रकार कम नहीं है । इस स्थापना का अर्थ है घर में भगवान् के मंदिर का निर्माण कर लेना । इसमें कोई पूजा

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
भी नहीं करनी पड़ती है । मात्र श्रमदान से ही सारा काम चल जाता है । थाँवले को जल्दी–जल्दी पोतते रहा जाए, तो उसका सुहावना रूप श्रद्धा संवर्द्धन की भूमिका भी संपन्न करता रहेगा ।

तुलसी बिरवा से श्रद्धा का पुनर्जीवन :

इन दिनों वायु प्रदूषण की तरह चेतनात्मक वातावरण भी कम विषाक्त नहीं हो रहा है । वातावरण के परिशोधन में जिस धर्म श्रद्धा का पुनर्जीवन आवश्यक है, उसकी पूर्ति तुलसी देवालय के माध्यम से बन पड़ती है । इस प्रकार तुलसी आरोपण में न केवल वायुमंडल के संशोधन की वरन् आस्था संकट से घिरे हुए वातावरण से श्रद्धा संवर्द्धन की आवश्यकता भी बहुत हद तक पूरी होती है । एक प्रकार से दुहरा लाभ प्रदान करने वाले हरीतिमा संवर्द्धन अभियान का शुभारंभ तुलसी रोपण के साथ करने की बात सोचनी चाहिए । इसके लिए बीज इकट्ठे करने, पौध उगाने, लगाने का प्रचार करने के लिए हम सभी को प्रयत्न करना चाहिए । उत्साह उभारा जाए और तत्काल सहायता देने के लिए प्रयत्न किया जा सके तो प्रज्ञा परिवार संकट

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
की इस महती आवश्यकता को पूरी करने में भली प्रकार सफल हो सकता है ।

तुलसी को प्रतीक मानकर हरीतिमा संवर्द्धन के कार्य का श्रीगणेश एक व्यापक और विस्तृत प्रक्रिया है । वनस्पति हमारे लिए जीवन प्राण है, वह धरती से आहार, बादलों से जल, आकाश से प्राण वायु खींचकर जीवन संपदा के रूप में प्रदान करती है । इसलिए उसे पशुपालन, गोपालन की तरह ही महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए । तुलसी के साथ दिव्य औषधि की विशेषताएँ तथा अध्यात्म परायण श्रद्धा भावनाएँ भी जुड़ती हैं और इसके लाभ तीन से बढ़कर पाँच हो जाते हैं । श्रद्धा आरोपण के लिए देव प्रतिमाओं को धातु पाषाण की अपेक्षा वनस्पति तुलसी के रूप में पूजा जाना उपयोगिता के साथ जुड़ता है । उसमें कृतज्ञता की एक नई भाव गरिमा का समावेश होने से लाभ का अनुपात दुहरा बनता है ।

तुलसी के बीज बोने और नए पौधे लगाने के लिए अगस्त का महीना सबसे उपयुक्त है । कार्यकर्त्ता भाई और विशेष रूप से बहनों को नए

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पौधे तैयार करने चाहिए और मुहल्ले, गाँव, कालोनी आदि में घर–घर पौधे बाँटने का कार्य करना चाहिए । हर घर में पाँच–पाँच पौधे लगाने का प्रयास करना चाहिए । पौधे लगाने के लिए मिट्टी अथवा सीमेंट के गमले, पुराने टूटे घड़ों के निचले भाग, टीन के खराब पीपे, प्लास्टिक के टूटे डिब्बे, टूटी बाल्टी आदि का उपयोग किया जा सकता है । परिजनों को कम से कम २४ घरों में ५–५ पौधे लगाने का प्रयास करना चाहिए ।

आशा है आपको यह पुस्तिका अच्छी लगी होगी । इस पुस्तिका को एक सप्ताह से अधिक अपने पास रखना ज्ञानयज्ञ में विघ्न डालना है । आप भी कुछ पुस्तकें समाज में वितरित करें ।

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानयज्ञ की क्रांतिकारी योजनाएँ

(१) **श्रीराम झोला पुस्तकालय**–समयदान के अंतर्गत परिजन नित्यप्रति न्यूनतम एक घर में साहित्य बदलने का कार्य करें । पूज्यवर के चिंतन को घर–घर पहुँचाएँ ।

(२) **माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय**–नियमित दैनिक अंशदान (न्यूनतम ५० पैसा प्रतिदिन) ज्ञानयज्ञ के लिए निकालकर १५) रुपए की युग चेतना साहित्य की ५० पॉकेट बुक्स प्रतिमाह पढ़ने के लिए बाँटें ।

(३) **गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना**–पुरानी पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना की स्लिप लगाकर समाज में वितरित कर दें । स्लिप गायत्री तपोभूमि, मथुरा से मँगा सकते हैं ।

(४) **युग चेतना साहित्य वितरण योजना**–३० पैसा मूल्य वाली १६ पेजी पॉकेट बुक्स न्यूनतम ९०० मँगाने के लिए डाकखर्च सहित कुल २२५) रुपया भेजकर मँगाएँ और वितरित करें ।

संपर्क सूत्र–**विचार क्रांति अभियान**
युग निर्माण योजना, मथुरा–२८१००३

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग ऋषि चिंतन

विचारों की विचारों से काट, आस्थाओं का परिष्कार और उल्टे को उलट कर सीधा करना ही विचार क्रांति का लक्ष्य है । सद्ज्ञान का आलोक नासमझी के अंधकार को मिटाने का कार्य संपादित करे । हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं । दुनिया को पलटने का जो दावा हम करते हैं, वह सिद्धियों से नहीं, अपने सशक्त विचारों से करते हैं । आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए ।

-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अधिक जानकारी के लिए पढ़ें : वृक्षारोपण एक परम पुनीत पुण्य-२), तुलसी के चमत्कारी गुण-३), स्वास्थ्य रक्षा प्रकृति के अनुसरण से ही संभव-६), युग ऋषि का अध्यात्म-युग ऋषि की वाणी में-७)५०, विकृत चिंतन रोग-शोक का मूलभूत कारण-६) ।

पुस्तक सूची के लिए निम्न पते पर लिखें ।

युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३
फोन : (०५६५) ४०४०००, ४०४०१५

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org